

सामाजिक विज्ञान

(नागरिक शास्त्र)

अध्याय-2: स्वास्थ्य में सरकार की भूमिका



स्वास्थ्य में सरकार की भूमिका

स्वास्थ्य से तात्पर्य किसी बीमारी या चोट से मुक्त होने की स्थिति से है। स्वास्थ्य का अर्थ केवल बीमारियों से मुक्ति ही नहीं है, बल्कि लोगों के लिए स्वच्छ पेयजल, पर्याप्त भोजन और स्वच्छ वातावरण भी है। स्वस्थ मन ही स्वस्थ शरीर का निर्माण करता है। किसी भी मानसिक तनाव से मुक्त रहने की भी आवश्यकता है। स्वस्थ मन और स्वस्थ शरीर से ही व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है। एक लोकतंत्र में, लोग अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं जो अपने निर्वाचन क्षेत्रों के विकास के उद्देश्य से नीतियां बनाते हैं। एक लोकतांत्रिक सरकार एक कल्याणकारी सरकार है जिसका मूल कार्य अपने लोगों को शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना है।

स्वास्थ्य :- बीमारियों व चोट आदि से मुक्त रखना।

- स्वच्छ पानी, प्रदूषण मुक्त वातावरण
- भरपेट भोजन घुटनभरी अवस्था से मुक्ति,

सार्वजनिक :- वह सेवा या कार्य जो देश के सब लोगों के लिए है और मुख्य रूप से सरकार द्वारा आयोजित किया जाता है स्कूल अस्पताल टेलीविजन इत्यादि सेवा की मांग कर सकते हैं संस्थाओं की सवाल उठा सकते हैं।

निजी :- वह सेवा या कार्य जो किसी व्यक्ति या कंपनी द्वारा अपने लाभ के लिए आयोजित किया जाता है।

भारत में स्वास्थ्य सुविधाएं

हेल्थकेयर सुविधाओं में वह सब कुछ शामिल है जिसके लिए रोगियों को देखभाल और सेवाओं की आवश्यकता होती है। इसमें अस्पताल, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और परीक्षण के लिए प्रयोगशालाएं शामिल हैं।

एम्बुलेंस सेवाएं, दवाएं, चिकित्सा उपकरण, डॉक्टर, नर्स और अन्य स्वास्थ्य पेशेवर। भारत में स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं के बारे में कुछ तथ्य इस प्रकार हैं:

- यद्यपि भारत में विश्व में सबसे अधिक मेडिकल कॉलेज हैं, जो प्रति वर्ष 15,000 से अधिक डॉक्टरों का उत्पादन करते हैं, अधिकांश डॉक्टर शहरी क्षेत्रों में बसे हुए हैं।

इससे ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित हो रही हैं।

- हालांकि पिछले कुछ वर्षों में स्वास्थ्य सुविधाओं में काफी वृद्धि हुई है, फिर भी लाखों लोग मलेरिया और तपेदिक के कारण मर जाते हैं।
- जबकि बहुत से लोग चिकित्सा के लिए भारत आते हैं, हम अपने सभी लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने में असमर्थ हैं।
- भारत दुनिया में दवाओं का चौथा सबसे बड़ा उत्पादक है लेकिन देश में आधे से अधिक बच्चे कुपोषण से पीड़ित हैं क्योंकि उन्हें खाने के लिए पौष्टिक और पर्याप्त भोजन नहीं मिलता है।



भारत लाखों लोगों के पास आज भी शुद्ध पीने के पानी की उपलब्धता नहीं है

उपरोक्त तथ्य हमें भारत में स्वास्थ्य देखभाल की स्थिति की विपरीत तस्वीर देते हैं। भारत में बड़ी संख्या में डॉक्टर, क्लीनिक और अस्पताल हैं। देश में एक सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली भी है। इसका मतलब है कि देश भर में लोगों के इलाज के लिए सरकार द्वारा कई अस्पताल और स्वास्थ्य केंद्र चलाए जा रहे हैं। भारत ने चिकित्सा विज्ञान में भी महान तकनीकी प्रगति की है। हालांकि हम यह भी देखते हैं कि भारत में समग्र स्वास्थ्य स्थिति खराब है। हम लोगों को बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया नहीं करा पा रहे हैं। कई जगहों पर लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिलता है जिसके कारण वे विभिन्न जल जनित बीमारियों जैसे डायरिया, हेपेटाइटिस आदि से पीड़ित होते हैं। आइए भारत में सार्वजनिक और निजी स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं के बीच के अंतर को समझते हैं।

सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएं

भारत एक लोकतांत्रिक देश है और हमारे संविधान के अनुसार, सरकार का प्राथमिक कर्तव्य लोगों का कल्याण सुनिश्चित करना है। सरकार की कल्याणकारी गतिविधियों में से एक है

लोगों को कम लागत पर बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना। भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली की कुछ विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- भारत में अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों की श्रृंखला जो सरकार द्वारा चलाई जाती है, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएं कहलाती है।
- ये स्वास्थ्य केंद्र न केवल सामान्य बीमारियों का इलाज करते हैं बल्कि जटिल सर्जरी भी करते हैं।
- गांवों में स्वास्थ्य केंद्रों में आमतौर पर एक प्रशिक्षित नर्स और एक स्वास्थ्य कार्यकर्ता होता है। वे सामान्य बीमारियों से पीड़ित लोगों का इलाज करते हैं। वे प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (पीएचसी) में डॉक्टरों की देखरेख में काम करते हैं।
- एक पीएचसी कई गांवों की देखभाल करता है।
- जिला स्तर पर, एक जिला अस्पताल एक विशेष जिले में सभी स्वास्थ्य केंद्रों के काम का पर्यवेक्षण करता है।
- बड़े शहरों में, सरकार ने कई अस्पताल (सरकारी अस्पताल के रूप में जाने जाते हैं) खोले हैं जो सभी आर्थिक वर्गों के लोगों को उपचार प्रदान करते हैं।

सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं का नाम निम्नलिखित कारणों से रखा गया है:

- सभी लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए सरकार द्वारा स्वास्थ्य केंद्र और अस्पताल स्थापित किए गए हैं।
- इन अस्पतालों के वित्तीय संसाधन लोगों द्वारा चुकाए जाने वाले करों के एक हिस्से से आते हैं।
- ये स्वास्थ्य सेवाएं लोगों को या तो कम लागत पर या मुफ्त में प्रदान की जाती हैं। ऐसा इसलिए किया गया है ताकि गरीब लोग भी इन सेवाओं को वहन कर सकें।
- सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएं लोगों को मलेरिया, तपेदिक, पीलिया, हैजा आदि रोगों के परिणामों से अवगत कराती हैं।
- अभियानों, नुक्कड़ नाटकों, मीडिया में विज्ञापनों आदि के माध्यम से लोगों में जागरूकता फैलाई जाती है।

निजी स्वास्थ्य सेवाएं

निजी स्वास्थ्य सेवाएं उन सेवाओं को संदर्भित करती हैं जो निजी स्वामित्व वाले क्लिनिकों या अस्पतालों द्वारा प्रदान की जाती हैं। ये या तो किसी व्यक्ति या किसी संगठन के स्वामित्व

में हैं। निजी अस्पताल आमतौर पर आधुनिक चिकित्सा उपकरणों और प्रयोगशालाओं से लैस होते हैं। आमतौर पर अल्ट्रासाउंड, एक्स-रे आदि जैसी कई सुविधाएं इन अस्पतालों के परिसर में स्थित होती हैं।

निजी अस्पतालों या क्लीनिकों में इलाज की लागत अधिक है। मरीजों को हर चिकित्सा सुविधा के लिए एक बड़ी राशि खर्च करनी पड़ती है जो उनके द्वारा प्राप्त की जाती है। शहरी क्षेत्रों में कई निजी स्वामित्व वाले क्लीनिक और अस्पताल हैं। कई बार कई बड़ी कंपनियां निजी अस्पताल चलाती हैं। वे दवाएं भी बनाते और बेचते हैं।

निजी स्वास्थ्य सेवाओं की कमियां:

- भारत में स्वास्थ्य सुविधाएं सभी लोगों के लिए समान रूप से उपलब्ध नहीं हैं।
- जबकि निजी स्वास्थ्य सेवाओं में वृद्धि हो रही है, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं की मात्रा और गुणवत्ता समान बनी हुई है।
- निजी स्वास्थ्य सेवाएं ज्यादातर शहरी क्षेत्रों में केंद्रित हैं।
- निजी स्वामित्व वाले क्लीनिकों और अस्पतालों में इलाज की लागत इतनी अधिक है कि आम लोग उन्हें वहन नहीं कर सकते।
- मुनाफा कमाने के लिए, कई निजी अस्पताल गलत प्रथाओं को प्रोत्साहित करते हैं। डॉक्टर अनावश्यक परीक्षणों की सलाह देते हैं और महंगी दवाएं लिखते हैं।

स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं तक पहुँचने में असमानताएँ

- यह अनुमान लगाया गया है कि भारत की कुल आबादी का केवल 20 प्रतिशत ही उन दवाओं का खर्च उठा सकता है जो उनकी बीमारी के दौरान उन्हें दी जाती हैं। यह भी बताया गया है कि चालीस प्रतिशत लोग जो अपनी बीमारी के कारण अस्पतालों में भर्ती हैं, उन्हें अपने इलाज के लिए पैसे उधार लेने पड़ते हैं।
- गरीब लोग कुपोषित होने के कारण बीमारी की चपेट में अधिक आते हैं। उनके पास स्वच्छ पेयजल, स्वच्छ परिवेश और उचित स्वच्छता सुविधाएं जैसी बुनियादी सुविधाएं भी नहीं हैं। इसके अलावा, बीमारी पर खर्च करने से उनकी स्थिति और खराब हो जाती है।
- लैंगिक भेदभाव महिलाओं के स्वास्थ्य को भी प्रभावित करते हैं। चूंकि महिलाओं के स्वास्थ्य को कोई महत्व नहीं दिया जाता है, इसलिए उन्हें तुरंत डॉक्टर के पास नहीं ले जाया जाता है।

स्थिति में सुधार के लिए उठाए जा सकने वाले कदम

- सरकार को विशेष रूप से समाज के गरीब वर्गों के लोगों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने की आवश्यकता है।
- चूंकि अधिकांश रोग अस्वच्छ वातावरण और उचित स्वच्छता सुविधाओं के अभाव से उत्पन्न होते हैं, इसलिए लोगों को स्वच्छ वातावरण में रहने के लाभों के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए।
- इसे मीडिया विज्ञापनों, अभियानों, नुक्कड़ नाटकों आदि के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।
- लोगों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के प्रभावी तरीकों में से एक पंचायतों को बजट आवंटित करना है। इस तरह पंचायतें सुनिश्चित कर सकती हैं
- स्वच्छ जल, भोजन, महिला स्वास्थ्य आदि की व्यवस्था के लिए समुचित योजना एवं क्रियान्वयन किया जाता है।
- केरल राज्य सरकार ने इस पद्धति का पालन किया जब उसने अपने स्वास्थ्य बजट का चालीस प्रतिशत पंचायतों को आवंटित किया। इस कदम से ग्राम स्तर पर लोगों की सामान्य स्वास्थ्य स्थिति में सुधार हुआ। हालांकि, उन्हें कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ा जैसे दवाओं की कमी और चिकित्सा पेशेवरों की अपर्याप्त संख्या।
- कोस्टा रिका सरकार द्वारा लोगों के स्वास्थ्य मानकों में सुधार का एक और तरीका आजमाया गया। उसने सेना नहीं रखने का फैसला किया। सेना को बनाए रखने के लिए जो पैसा इस्तेमाल किया जाना था, उसे स्वास्थ्य, शिक्षा और लोगों की सामान्य जरूरतों को पूरा करने के लिए खर्च किया गया था।
- कोस्टा रिकन सरकार ने अपने नागरिकों को स्वच्छ पेयजल, उचित स्वच्छता सुविधाएं, पोषाहार भोजन और आवास सुविधाएं उपलब्ध कराने पर धन खर्च किया।

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 29)

प्रश्न 1 इस अध्याय में आपने पढ़ा है कि स्वास्थ्य में सिर्फ बीमारी की बात नहीं की जा सकती है। संविधान से लिए गए एक अंश को यहाँ पढ़िए और अपने शब्दों में समझाइए कि 'जीवन का स्तर' और 'सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्या मायने होंगे।

उत्तर - भारतीय संविधान में लिखा गया है कि नागरिकों के पोषाहार स्तर और जीवन स्तर को ऊँचा करना राज्य का कर्तव्य है। सरकार का यह भी कर्तव्य है कि वह लोक स्वास्थ्य में सुधार करें।

- **जीवन स्तर** - इससे अभिप्राय है कि नागरिकों को उच्च श्रेणी की चिकित्सा, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ प्राप्त हों। सभी नागरिकों को साफ सुथरा पर्यावरण, मनोरंजन, स्वच्छ पेयजल तथा रोजगार की सुविधाएँ प्राप्त हों।
- **सार्वजनिक स्वास्थ्य** - सार्वजनिक स्वास्थ्य सरकार द्वारा स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रदान की गयी सुविधाओं की एक श्रृंखला है। इस श्रृंखला में सरकारी अस्पताल, डिस्पेंसरी, स्वास्थ्य केंद्र, एम्बुलेंस सेवा, राष्ट्रीय स्तर पर चलाए जाने वाले टीकाकरण शामिल हैं।

प्रश्न 2 सबके लिए स्वास्थ्य को सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए सरकार कौन - कौन से कदम उठा सकती है ? चर्चा कीजिए।

उत्तर - सबके लिए स्वास्थ्य की सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए सरकार निम्नलिखित कदम उठा सकती है। जैसे:- सरकार स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के बजट में बढ़ोतरी कर सकती है। सरकार लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए वी.आई.पी. व्यक्तियों की सुरक्षा के लिए बजट में कटौती कर सकती है। सरकार बजट का कम - से - कम 30 से 40 प्रतिशत भाग स्थानीय संस्थाओं को उपलब्ध करा सकती है। सरकार आम जनता के लिए स्वच्छ पेय जल, साफ - सफाई, पोषण आदि की व्यवस्था कर सकती है।

प्रश्न 3 आपको, अपने इलाके में उपलब्ध सार्वजनिक और निजी स्वास्थ्य सेवाओं में क्या - क्या अंतर देखने को मिलते हैं ? नीचे दी गई तालिका को भरते हुए, इनकी तुलना कीजिए और अंतर बताए।

सुविधा	सामर्थ्य	उपलब्धता	गुणवत्ता
निजी			
सार्वजनिक			

उत्तर -

सुविधा	सामर्थ्य	उपलब्धता	गुणवत्ता
निजी	अत्यधिक	ये सुविधाएं गावों में बहुत कम उपलब्ध होती हैं।	कम होती हैं।
सार्वजनिक	कम	शहरों में अस्पताल, स्वास्थ्य केंद्र, मेडिकल कॉलेज आदि होते हैं।	अधिक होती हैं।

प्रश्न 4 पानी और साफ - सफाई की गुणवत्ता को सुधार कर अनेक बीमारियों की रोकथाम की जा सकती है, उदाहरण देते हुए इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - पानी और साफ - सफाई की गुणवत्ता में सुधार करके अनेक बीमारियों की रोकथाम की जा सकती है। स्वच्छ पानी ' साफ - सफाई का अभाव तथा कुपोषण अनेक बीमारियों के फैलने का कारण बनता है। गंदे तथा रुके हुए पानी से मलेरिया फैलता है। संक्रमित पानी के उपयोग से टाइफाइड, हैजा, पेचिश, दस्त आदि बीमारियाँ फैलती हैं।